ज्योतिर्दर्शिका – चिरानन्ददर्शनम्

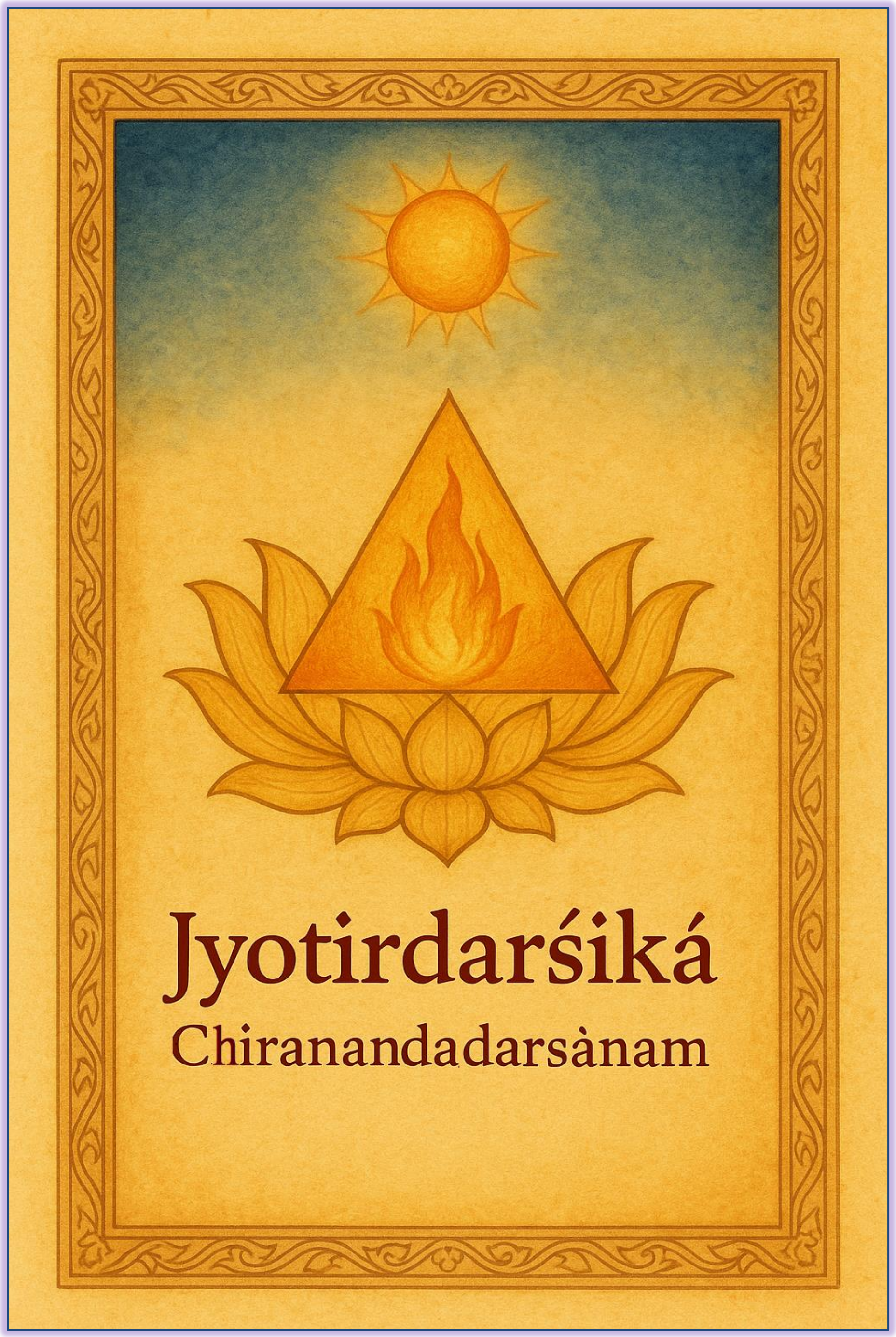

अनन्ताय नमः, गुरवे रामकिंकराय (रमेशचन्द्राय) नमः, दक्षिणामूर्तेः दिव्यानुग्रहे शिवशक्तिसंयुते आत्मसमर्पणम्।

In reverence to Eternity, in homage to Guru Ramkinkar (Ramesh Chandra), and in surrender to the divine guidance of Dakṣiṇāmūrti — the union of Śiva and Śakti.

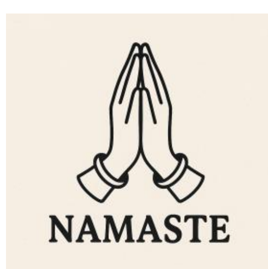

अभिभाषणम् : Preface

ज्ञान का मार्ग अनन्त है। मन असंख्य तरंगों को छोड़ता है, जो चारों ओर बिखर जाती हैं — प्रायः सुख और भोग की खोज में। किन्तु क्या धर्म है और क्या अधर्म, यह हमें केवल शास्त्रों से और जीवन द्वारा उकेरे गये पाठों से ही ज्ञात होता है। कोई भी सत्य तब तक स्पष्ट नहीं होता जब तक भीतर गहन अनुभूति का उदय न हो। फिर भी दुविधा बनी रहती है — क्योंकि धर्म केवल पालन करने का नियम नहीं, बल्कि वह ज्योति है जिसे हमें स्वयं खोजना होता है।

परन्तु यह ज्योति क्या है जिसकी हमें खोज है? और क्यों? समस्त ब्रह्माण्ड विशालता के आवरण में ढका है — अधिकांशतः अदृश्य, अंधकारमय पदार्थ और ऊर्जा से बना। जिसे हम प्रकाश कहते हैं, वह केवल जलते हुए तारों से आता है — जो स्वयं को अर्पित कर शून्य को आलोकित करते हैं। फिर भी ये तारे भी पीड़ा में जलते हैं — कभी उग्र वेदना में, कभी मौन व्यथा में। किन्तु उसी तप से वे ऊष्मा और प्रकाश छोड़ते हैं। उनकी दीप्ति इतनी प्रखर होती है कि हमारी आँखें उन्हें उनके सत्य स्वरूप में नहीं देख पातीं; हमें केवल उसका कोमल परावर्तित रूप ही दिखता है। क्या यही वह प्रकाश है जिसकी ओर हम लौट रहे हैं? वह प्रकाश जिसे नेत्र सहन नहीं कर सकते — जो बलिदान, अग्नि और अनन्त समर्पण से उत्पन्न होता है?

तब एक और गहन प्रश्न उठता है — प्रकाश ही क्यों, वह असीम अंधकार क्यों नहीं जो ब्रह्माण्ड को व्यापता है? उत्तर भीतर से फूटता है: क्योंकि अंधकार पटभूमि है, गन्तव्य नहीं। अंधकार धारण करता

है, पर उद्‌घाटित नहीं करता। प्रकाश, चाहे क्षणभंगुर हो और अग्नि से जन्मा हो, मार्ग को प्रकट करता है, दृष्टि को जाग्रत करता है, और शून्य में छिपे हुए क्रम को प्रतिबिम्बित करता है। आत्मा अंधकार की ओर आकांक्षा नहीं करती, क्योंकि वह मौन को पहले से ही जानती है; वह प्रकाश की ओर आकांक्षा करती है, क्योंकि प्रकाश में वह स्वयं को पहचानती है।

जैसे तारे, वैसे ही हम भी जलने को बुलाए जाते हैं — संघर्ष को दीप्ति में बदलने के लिए, उस ज्योति को उत्सर्जित करने के लिए जो आंतरिक अग्नि से जन्म लेती है। हमारी आँखें भौतिक प्रकाश तक सीमित हैं, किन्तु आत्मा उच्चतर दीप्ति से जुड़ी है — सत्य, करुणा और चैतन्य की ज्योति से। अतः सच्चा ज्ञान तब प्रारम्भ होता है जब मनुष्य अस्थायी का पीछा छोड़कर धर्ममूलक प्रयत्न के लिए संघर्ष करना सीखता है। यह कठिन अवश्य है, पर असम्भव नहीं — क्योंकि उच्चतर मार्ग का प्रत्येक चरण मन की वासनाओं पर विजय है और उस अनन्त ज्योति की ओर अग्रसरता है जो सम्पूर्ण अस्तित्व का सार है।

The path to wisdom is eternal. The mind releases countless pulses, scattering in all directions, often chasing comfort and pleasure. Yet what is righteous and what is not, we come to know only through the scriptures and through the lessons life engraves upon us. Nothing appears absolutely defined until a deeper realization dawns within. Still, the dilemma continues — for righteousness is not merely a rule to follow, but a light we must discover.

But what is this light we seek, and why? The universe itself is veiled in vastness — mostly dark matter and dark energy, unseen by the human eye. What we call light comes only from burning stars, who give of themselves to illuminate the void. Yet these stars too burn in pain — sometimes violent, sometimes in silent agony — but in their suffering they release warmth. Their brilliance is so intense that our eyes cannot bear to see them as they truly are; we only perceive the softened spectrum reflected to us. Is that the light we are tracing back? The light beyond what eyes can endure, the light born of sacrifice, of fire, of an eternal offering?

But then comes the deeper question — why light, and not the vast darkness that pervades the universe? The answer stirs within: because darkness is the canvas, not the destination. Darkness holds, but it does not reveal. Light, though fleeting and born of fire, reveals the path, awakens the eye, and reflects the hidden order within the void. The soul does not yearn for darkness, for it already knows silence; it yearns for light, for in light it recognizes itself.

Like the star, we too are called to burn — to transform struggle into radiance, to emit a light born of inner fire. Our eyes may be bound to the physical spectrum, but our soul is attuned to a higher radiance: the light of truth, compassion, and consciousness. Thus, true wisdom begins when one no longer chases the transient but learns to struggle for the righteous motive. Though difficult, it is never impossible, for each step on the higher path is a victory over the impulses of the mind and a movement toward the eternal light that is the essence of all being.

प्रारम्भिक स्तोत्र : Opening Hymns

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

One meditates upon Lord Vishnu, robed in white, moon-like in complexion, with four arms and a serene face, for the removal of all obstacles.

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

O Ganeśa, mighty and curved-trunked, radiant as millions of suns, kindly remove all hindrances from my undertakings.

अनन्तज्ञानमार्गश्लोकाः Verses of Light

अनन्तो ज्ञानमार्गोऽयं,

चित्तस्पन्दैर्नित्यम्।

सुखे रतिर्नराणां तु,

शास्त्रजीवितपाठतः॥ १ ॥

न निश्चितं हि धर्मोऽधर्मः,

यावन्नैव विवेकतः।

अन्तर्बोध उदेति हि,

तदा ज्ञेयं निरूप्यते॥ २ ॥

ज्योतिः किं यत् वयं यामः,

कस्मात् तं गन्तुमिच्छामः।

तमो व्याप्यं जगत्सर्वं,

दृग्गोचरं न दृश्यते॥ ३ ॥

तारा ज्वलन्ति दुःखेन,

कदाचिद्भ्रीमदाहतः।

कदाचिन्मन्दशोकेन,

तेषां तेजः प्रस्फुरति॥ ४ ॥

तेषां दाहसमुत्पन्ना,

ऊष्मणा च प्रकाशना।

न शक्यं तेजसा द्रष्टुं,

लोचनं हि क्षमं न तु॥ ५ ॥

तन्नो ज्योतिः परं ध्येयं,

यत् पश्यामो न चक्षुषा।

यज्ञदीपसमुत्पन्नं,

सत्यं करुणया युतम्॥ ६ ॥

किं तु ज्योतिः न तु तमः,

इति प्रश्नोऽन्तरुद्भवः।

तमः पटलमेवास्ति,

न गतिः स्यात् कदाचन॥ ७ ॥

ज्योतिः पन्थानमाचक्षे,

नेत्रं जागरयत्यपि।

सत्यं चैतन्यमार्गं च,

दर्शयत्यन्तरात्मनि॥ ८ ॥

यथा तारा ज्वलेदग्नौ,

दुःखेनापि प्रकाशिनी।

तथा वयं दहेमाशु,

तेजसा धर्मनिष्ठया॥ ९ ॥

दुर्लभोऽपि न दुरापः,

मार्गो धर्मस्य साधनः।

प्रत्येकं चरणं तस्य,

मोक्षदीपप्रकाशकम्॥ १० ॥

इति मन्त्रस्य "ॐ हौं ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं नं श्रीं लं यं रं हं वं हिरं ह्रौं अहं ब्रह्मास्मि तत् त्वम् असि अयमात्मा ब्रह्म प्रज्ञानं ब्रह्म विधाय नमः स्वाहा।"

बीजाक्षरों सहित दस श्लोक : The Ten Verses with Bījas

१. (Matsya – Om, अहं ब्रह्मास्मि)

अनन्तो ज्ञानमार्गोऽयं, चित्तस्पन्दैर्नित्यम्। सुखे रतिर्नराणां तु, शास्त्रजीवितपाठतः॥ ॐ अहं ब्रह्मास्मि ।

२. (Kūrma – हौं, तत् त्वम् असि)

न निश्चितो धर्मोऽधर्मो, यावन्नैव विवेकतः। अन्तर्बोध उदेति हि, तदा ज्ञेयं निरूप्यते॥ हौं तत् त्वम् असि ।

३. (Varāha – ऐं, अयमात्मा ब्रह्म) ज्योतिः किं यत् वयं यामः, कस्मात् तं गन्तुमिच्छामः। तमो व्याप्यं जगत्सर्वं, दृग्गोचरं न दृश्यते॥

ऐं अयमात्मा ब्रह्म ।

५. (Vāmana – क्लीं, स्वाहा)

तेषां दाहसमुत्पन्ना, ऊष्मणा च प्रकाशना। न शक्यं तेजसा द्रष्टुं, लोचनं हि क्षमं न तु॥ क्लीं स्वाहा ।

६. (Paraśurāma – क्रीं, नमः)

तन्नो ज्योतिः परं ध्येयं, यत् पश्यामो न चक्षुषा।

यज्ञदीपसमुत्पन्नं, सत्यं करुणया युतम्॥ क्रीं नमः ।

७. (Rāma – नं, प्रज्ञानं ब्रह्म)

किं तु ज्योतिः न तु तमः, इति प्रश्नोऽन्तरुद्भवः। तमः पटलमेवास्ति, न गतिः स्यात्कदाचन॥ नं प्रज्ञानं ब्रह्म ।

८. (Kṛṣṇa – श्रीं, विधाय नमः)

ज्योतिः पन्थानमाचक्षे, नेत्रं जागरयत्यपि। सत्यं चैतन्यमार्गं च, दर्शयत्यन्तरात्मनि॥ श्रीं विधाय नमः ।

९. (Buddha – लं यं रं हं, स्वाहा)

यथा तारा ज्वलेदग्नौ, दुःखेनापि प्रकाशिनी। तथा वयं दहेमाशु, तेजसा धर्मनिष्ठया॥ लं यं रं हं स्वाहा ।

१०. (Kalki – वं हिरं ह्रौं, अहं ब्रह्मास्मि)

दुर्लभोऽपि न दुरापो, मार्गो धर्मस्य साधनः। प्रत्येकं चरणं तस्य, मोक्षदीपप्रकाशकम्॥ वं हिरं ह्रौं अहं ब्रह्मास्मि ।

अनन्तारती : Anant Āratī

आरती अनन्त की, ज्योति अखण्ड प्रकटे ।

रूप न आकार तेरा, प्रकाशरूप बसते ॥

न तेरा आदि दिखाई, न तेरा अन्त मिलेगा ।

शून्य नभ मंझ गूँजे, ओंकार ही सुनाई देगा ॥

यदि वचन या मन से, यदि कर्म से चूके हम ।

हे अनन्त शरण तेरी, कर दो क्षमा अपराध सब ॥

Aarti to the Eternal, where unbroken light shines. No form, no figure — Thou dwellest as pure radiance.

No beginning of Thee is seen, no end shall ever be found. In the silent sky resounds only Om, the eternal sound.

If by word, by thought, or by deed we faltered, O Eternal One, forgive us all, in Thy refuge sheltered.

समापन प्रार्थना : Closing Invocation

यह “ज्योतिर्दर्शिका” केवल शब्दों का ग्रंथ न रहे, बल्कि स्मृति का दीपक बने — साधकों के अंतर-पथ को आलोकित करे।

May this “Jyotirdarśikā” not remain a book of words alone, but a lamp of remembrance — to light the inward path of seekers.